हमें जिंदा रहना है
दुख पर काबू पाने के लिए

प्रफुल्ल कोलख्यान

मेरी बच्ची सुबह-सुबह मेरे लिए चाय बना रही है
बावजूद दुख के इससे अधिक खुशगवार सुबह मेरे लिए हो नहीं सकती
एक ऐसी सुबह जहाँ से अंधेरे के खिलाफ मद्धम-मद्धम आवाज आती हो
और चाय के खौलते पानी के साथ मेरी बेटी गीत गाती हो

रात के दस बजे हैं
मैं दाल में नमक की स्थिति पर आत्म-संघर्ष कर रहा हूँ
दूरदर्शन पर थ्रिलर एट टेन आ रहा है
फोन की घंटी बजने लगती है
यथासंभव अन्य घरेलू आवाज को थामकर
फोन उठाता हूँ
हलो, मदन कश्यप । पटना से। बहुत बुरी खबर है।
मैनेजर पांडेय के इकलौते पुत्र आनंद की हत्या कर दी गयी है
पुलिस ने ही गोली मार दी है.... बिल्कुल नजदीक से

दिन भर की थकान और मुसकान को किनारे कर सोने की तैयारी कर रहा हूँ
शायद कोई सपना आ जाये जिंदगी के ताप से छनकर ---
हलो..... प्रफुल्ल जी
रविभूषण राँची से। बहुत बुरी खबर है। अशोक सिन्हा नहीं रहे....
कैसे? कब?
हर्ट अटैक से। कल।

तारीखें अलग-अलग हैं पर पसरी हुई एक ही त्रासदी है
यहाँ से वहाँ तक जिंदगी दुख की एक बहती हुई नदी है

मेरी बेटी निरंतर अपने दाग से जूझती हुई
बाज दफा हारने भी लगती है अपनी दाग-दाग जिंदगी से
मैं उसे कविता की घूंटी पिलाकर बचाना चाहता हूँ
मैं उसके लिए बाज दफा कविता लिखने का वादा करता हूँ

मुसीबत यह है कि कविता कैसे लिखूँ आज की रात
जब घने बादल में पानी की एक भी बूँद न हो और बिजलियाँ
आसमान में लिट्टेई सुरंग की तरह बिछीं हों.......

...नींद खुली है, रात के सपने की हल्की सी परछाई मन पर बची रह गयी है
परछाई को पकड़कर आज की सुबह उठना चाहता हूँ
परछाई में मैनेजर पांडेय मुक्तिबोध की कविता से अंधेरे में जिरह कर रहे हैं
सरोज स्मृति से निराला को हासिल कर रहे हैं
मैनेजर पांडेय कबीर का पीछा करते-करते बाजार से लड़ रहे हैं
मैनेजर पांडेय गोरख को हाँक लगा रहे हैं
मैनेजर पांडेय सिवान के युवा कवियों से आगे के रास्ते पर बतिया रहे हैं
मैनेजर पांडेय आँसू की बूँदों को फाड़कर मुस्कुरा रहे हैं
वाह मैनेजर पांडेय वाह

रविभूषण की बात सही है
मृत्यु के कई कारण होते हैं लेकिन वे जीवन के कारण से बड़े नहीं होते हैं
युद्ध के कई कारण होते हैं लेकिन वे शांति के कारणों से बड़े नहीं होते हैं
रविभूषण गुससे में हैं, रविभूषण दुख में हैं, रविभूषण आवेश में हैं
मृत्यु रविभूषण के आस-पास नाच रही है
रविभूषण हैं-- जैसे ब्यूह में अभिमन्यु, जैसे दुख में मैनेजर पांडेय
जैसे संकट में जीवन, जैसे क्षुब्ध सागर में लवण
जैसे क्रोध में करूणा
वाह रविभूषण वाह
हमें जिंदा रहना है दुख पर काबू पाने के लिए

मेरी बच्ची सुबह-सुबह मेरे लिए चाय बना रही है
बावजूद दुख के इससे अधिक खुशगवार सुबह मेरे लिए हो नहीं सकती
एक ऐसी सुबह जहाँ से अंधेरे के खिलाफ मद्धम-मद्धम आवाज आती हो
और चाय के खौलते पानी के साथ मेरी बेटी गीत गाती हो
सच इससे अधिक खुशगवार सुबह मेरे लिए हो नहीं सकती

वे विकास पुरुष हैं... विकास की असली तमक और नकली चमक के आगे वृहत्तर समाज के शोषण और बच्चों के कुपोषण का सवाल उठाना उनकी समझ में तो देशद्रोह ही है!!!